International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 84-87

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 84-87
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-09-2019
Accepted: 23-10-2019

मधु पटेल
1. शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत।
2. महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
मधु पटेल
1. शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत।
2. महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

काशिकाके तृतीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (भाषायां सदवसश्रुवः)

मधु पटेल

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक 'काशिकाके तृतीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश' है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः- काशिका, भाषायाम्, सदवसश्रुवः, प्रक्रिया।

प्रस्तावना

उपसेदिवान्

उप– उपसर्ग, षद्लृ (षद्)– धातु। 'धात्वादेः षः सः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/62) इस सूत्रसे ष् इसके स्थानमें स् यह आदेश हुआ–
उप स् अ द्– 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
उप स् अ द् वस्– 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/67) इस सूत्रसे वस् इसके आदिमें इट् (इ) यह आगम हुआ–
उप स् अ द् इ वस्– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे स् अ द् इसके स्थानमें सद् सद् यह द्विर्वचनादेश हुआ–
उप सद् सद् इ वस्– 'अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/120) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें ए यह आदेश हुआ तथा सद् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
उप स् ए द् इ वस्– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे स् ए द् इ वस् इससे पर प्रथमाविभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–
उप स् ए द् इ वस् स्– 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/70) इस सूत्रसे अ इससे पर नुम् (न्) यह आगम हुआ–
उप स् ए द् इ व न् स् स्– 'सान्तमहतः संयोगस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/72) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
उप स् ए द् इ व् आ न् स् स्– 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/66) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
उप स् ए द् इ व् आ न् स्– 'संयोगान्तस्य लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/72) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

उप स् ए द् इ व् आ न्– उपसेदिवान्।। इति सिद्धम्।।

उपासदत्

उप– उपसर्ग, षद्लृ (षद्)– धातु। 'धात्वादेः षः सः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/62) इस सूत्रसे ष् इसके स्थानमें स् यह आदेश हुआ–
उप स् अ द्– 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'लुङ्'

(अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लुङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
उप स् अ द् ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
उप स् अ द् त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर च्लि यह आदेश हुआ–
उप सद् अ द् च्लि त्– 'पुषादिद्युताद्यृलृदितः परस्मैपदेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/55) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें अङ् (अ) यह आदेश हुआ–
उप स् अ द् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे स् अ द् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
उप अ स् अ द् अ त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–

उप् आ स् अ द् अ त्– उपासदत्।। इति सिद्धम्।।

उपासीदत्

उप्– उपसर्ग, षद्लृ (षद्)– धातु। 'धात्वादेः षः सः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/62) इस सूत्रसे ष् इसके स्थानमें स् यह आदेश हुआ–
उप स् अ द्– 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रासे स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'अनद्यतने लङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/111) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
उप स् अ द् ति– 'इतश्च (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
उप स् अ द् त्– 'कर्तरि शप्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/68) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर शप् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
उप स् अ द् अ त्– 'पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/78) इस सूत्रसे स् अ द् इसके स्थानमें सीद् यह आदेश हुआ–
उप सीद् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे सीद् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
उप अ सीद् अ त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–

उप् आ सीद् अ त्– उपासीदत्।। इति सिद्धम्।।

उपससाद

उप– उपसर्ग, षद्लृ (षद्)– धातु। 'धात्वादेः षः सः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/62) इस सूत्रसे ष् इसके स्थानमें स् यह आदेश हुआ–
उप स् अ द्– 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें स् अ द् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'परोक्षे लिट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/115) इस सूत्रसे स् अ द् इससे पर लिट्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् यह प्रत्यय हुआ–
उप स् अ द् तिप्– 'परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/82) इस सूत्रसे तिप् इसके स्थानमें णल् (अ) यह आदेश हुआ–
उप स् अ द् अ– 'अत उपधायाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/116) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
उप स् आ द् अ– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे स् आ द् इसके स्थानमें सद् साद् यह द्विर्वचनादेश हुआ–
उप सद् साद् अ– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे स् द् इन दोनोंके स्थानमें स् यह शेषादेश हुआ–

उप स् अ साद् अ– उपससाद।। इति सिद्धम्।।

अनूषिवान् कौत्सः पाणिनिम्

अनु– उपसर्ग, वस (वस्)– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
अनु वस् वस्– 'वस्वेकाजाद्घसाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/67) इस सूत्रसे वस् इसके आदिमें इट् (इ) यह आगम हुआ–
अनु वस् इ वस्– 'वचिस्वपियजादीनां किति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/15) इस सूत्रसे व् इसके स्थानमें सम्प्रसारणसंज्ञक (उ) यह आदेश हुआ–
अनु उ अ स् इ वस्– 'सम्प्रसारणाच्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/104) इस सूत्रसे उ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (उ) यह एकादेश हुआ–
अनु उ स् इ वस्– 'लिटि धतोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे उ स् इसके स्थानमें वस् उस् यह द्विर्वचनादेश हुआ–
अनु वस् उस् इ वस्– 'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/17) इस सूत्रसे व् इसके स्थानमें सम्प्रसारणसंज्ञक (उ) यह आदेश हुआ–
अनु उ अ स् उस् इ वस्– 'सम्प्रसारणाच्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/104) इस सूत्रसे उ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (उ) यह एकादेश हुआ–
अनु उ स् उस् इ वस्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे स् इसका अदर्शन यह शेषादेश हुआ–
अनु उ उस् इ वस्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे उ उ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ऊ) यह एकादेश हुआ–
अनु ऊ स् इ वस्– 'शासिवसिघसीनां च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/60) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें ष् यह मूर्धन्यादेश हुआ–
अनु ऊ ष् इ वस्– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे ऊ ष् इ वस् इससे पर प्रथमाविभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–
अनु ऊ ष् इ वस् स्– 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/70) इस सूत्रसे अ इससे पर नुम् (न्) यह आगम हुआ–
अनु ऊ ष् इ व न् स् स्– 'सान्तमहतः संयोगस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/72) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
अनु ऊ ष् इ व् आ न् स् स्– 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/66) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

अनु ऊ ष् इ व् आ न् स्– 'संयोगान्तस्य लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/33) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
अनु ऊ ष् इ व् आ न्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे उ ऊ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ऊ) यह एकादेश हुआ–

अन् ऊ ष् इ व् आ न्– अनूषिवान्।। इति सिद्धम्।।

अन्ववात्सीत्
अनु– उपसर्ग, वस (वस्)– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे वस् इससे पर लुङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
अनु वस् ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
अनु वस् त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे वस् इससे पर च्लि यह आदेश हुआ–
अनु वस् च्लि त्– 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–
अनु वस् स् त्– 'वदव्रजहलन्तस्याचः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/3) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
अनु व् आ स् स् त्– 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/96) इस सूत्रसे त् इसके आदिमें ईट् (ई) यह आगम हुआ–
अनु व् आ स् स् ई त्– 'सः स्यार्धधातुके' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/49) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें त् यह आदेश हुआ–
अनु व् आ त् स् ई त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे व् आ त् स् इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अनु अ व् आ त् स् ई त्– 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/74) इस सूत्रसे उ इसके स्थानमें यण् (व्) यह आदेश हुआ–

अन् व् अ व् आ त् स् ई त्– अन्ववात्सीत्।। इति सिद्धम्।।

अन्ववसत्
अनु– उपसर्ग, वस (वस्)– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'अनद्यतने लङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/111) इस सूत्रसे वस् इससे पर लङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
अनु वस् ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
अनु वस् त्– 'कर्तरि शप्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/68) इस सूत्रसे वस् इससे पर शप् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
अनु वस् अ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे वस् अ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अनु अ वस् अ त्– 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/74) इस सूत्रसे उ इसके स्थानमें यण् (व्) यह आदेश हुआ–

अन् व् अ वस् अ त्– अन्ववसत्।। इति सिद्धम्।।

अनूवास
अनु– उपसर्ग, वस (वस्)– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें वस् इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'परोक्षे लिट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/115) इस सूत्रसे वस् इससे पर लिट्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् यह प्रत्यय हुआ–
अनु वस् तिप्– 'परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/82) इस सूत्रसे तिप् इसके स्थानमें णल् (अ) यह आदेश हुआ–
अनु वस् अ– 'अत उपधयाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/116) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
अनु व् आ स् अ– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे व् आ स् इसके स्थानमें वस् वास् यह द्विर्वचनादेश हुआ–
अनु वस् वास् अ– 'लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/17) इस सूत्रसे व् इसके स्थानमें सम्प्रसारणसंज्ञक (उ) यह आदेश हुआ–
अनु उ अ स् वास् अ– 'सम्प्रसारणाच्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/104) इस सूत्रसे उ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (उ) यह एकादेश हुआ–
अनु उ स् वास् अ– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे स् इसका अदर्शन यह शेषादेश हुआ–
अनु उ वास् अ– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे उ उ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (ऊ) यह एकादेश हुआ–

अन् ऊ वास् अ– अनूवास।। इति सिद्धम्।।

उपशुश्रुवान् कौत्सः पाणिनिम्
उप– उपसर्ग, श्रु– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे हुआ–
उप श्रु वस्– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे श्रु इसके स्थानमें श्रु श्रु यह द्विर्वचनादेश हुआ–
उप श्रु श्रु वस्– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रसे श् र् इन दोनोंके स्थानमें श् यह शेषादेश हुआ–
उप श् उ श्रु वस्– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे श् उ श्रु वस् इससे पर प्रथमाविभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–
उप श् उ श्रु वस् स्– 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/70) इस सूत्रसे अ इससे पर नुम् (न्) यह आगम हुआ–
उप श् अ श्रु व न् स् स्– 'सान्तमहतः संयोगस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/72) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ–
उप श् उ श्रु व् आ न् स् स्– 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/66) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
उप श् उ श्रु व् आ न् स्– 'संयोगान्तस्य लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/23) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

उप श् उ श्रु व् आ न्– उपशुश्रुवान्।। इति सिद्धम्।।

उपाश्रौषीत्

उप– उपसर्ग, श्रु– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लुङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–

उप श्रु ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

उप श्रु त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे श्रु इससे पर च्लि यह आदेश हुआ–

उप श्रु च्लि त्– 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–

उप श्रु स् त्– 'सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/1) इस सूत्रसे उ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (औ) यह आदेश हुआ–

उप श्र् औ स् त्– 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/96) इस सूत्रसे त् इसके आदिमें ईट् (ई) यह आगम हुआ–

उप श्र् औ स् ई त्– 'आदेशप्रत्यययोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/59) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें ष् यह मूर्धन्यादेश हुआ–

उप श्र् औ ष् ई त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे श्र् औ ष् इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–

उप अ श्र् औ ष् ई त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–

उप् आ श्र् औ ष् ई त्– उपाश्रौषीत्।। इति सिद्धम्।।

उपाशृणोत्

उप– उपसर्ग, श्रु– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'अनद्यतने लङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/111) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लङ्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–

उप श्रु ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–

उप श्रु तु– 'श्रुवः शृ च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/74) इस सूत्रसे श्रु इससे पर श्नु (नु) यह प्रत्यय हुआ तथा श्रु इसके स्थानमें शृ यह आदेश भी हुआ–

उप शृ नु त्– 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/84) इस सूत्रसे उ इसके स्थानमें गुणसंज्ञक (ओ) यह आदेश हुआ–

उप शृ न् ओ त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे शृ न् ओ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–

उप अ शृ न् ओ त्– 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/4/2) इस सूत्रसे न् इसके स्थानमें ण् यह आदेश हुआ–

उप अ शृ ण् ओ त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–

उप् आ शृ ण् ओ त्– उपाशृणोत्।। इति सिद्धम्।।

उपशुश्राव

उप– उपसर्ग, श्रु– धातु। 'भाषायां सदवसश्रुवः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/108) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय विकल्पसे प्राप्त हुआ तथा लिट् इसके स्थानमें क्वसु (वस्) यह आदेश विकल्पसे प्राप्त हुआ। अतः जिस पक्षमें श्रु इससे पर लिट् यह प्रत्यय नहीं हुआ उस पक्षमें 'परोक्षे लिट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/115) इस सूत्रसे श्रु इससे पर लिट्लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् यह प्रत्यय हुआ–

उप श्रु तिप्– 'परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/82) इस सूत्रसे तिप् इसके स्थानमें णल् (अ) यह आदेश हुआ–

उप श्रु अ– 'अचो ञ्णिति' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/115) इस सूत्रसे उ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (औ) यह आदेश हुआ–

उप श्र् औ अ– 'एचोऽयवायावः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/75) इस सूत्रसे औ इसके स्थानमें आव् यह आदेश हुआ–

उप श्र् आव् अ– 'लिटि धातोरनभ्यासस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/8) इस सूत्रसे श्र् आव् इसके स्थानमें श्रौ श्राव् यह द्विर्वचनादेश हुआ–

उप श्रौ श्राव् अ– 'ह्रस्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/59) इस सूत्रसे औ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (उ) यह आदेश हुआ–

उप श्र् उ श्राव् अ– 'हलादिः शेषः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/4/60) इस सूत्रासे श् र् इन दोनोंके स्थानमें श् यह शेषादेश हुआ–

उप श् उ श्राव् अ– उपशुश्राव।। इति सिद्धम्।।

संदर्भ

1. अष्टाध्यायीसूत्रापाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।